श्रीमन्त सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक.
सिद्धान्त ग्रंथमालासे प्रकाशनाधिकार प्राप्त

जीवराज जैन ग्रंथमाला

(धवला - पुष्प १)

श्री भगवत् - पुष्पदन्त - भूतबलिप्रणीतः

षट्खण्डागमः

वीरसेनाचार्य - विरचित - धवलाटीका - समन्वितः

तस्य

प्रथमखण्डे जीवस्थाने

सत्प्ररूपणा

खण्ड-१ भाग १ पुस्तक -१

ग्रन्थसम्पादक:

स्व. डॉ हीरालाल जैनः

सहसम्पादकौ

स्व. पं. फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री स्व. पं. बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

प्रकाशकः

जैन संस्कृति संरक्षक संघ,

संतोष भवन , ७३४, फलटण गल्ली,

सोलापूर - २ फोन - (०२१७) ३२०००७

वीर निर्वाण संवत् २५२६ इ. सन २०००

Rights to Publish Received from Shrimant Seth Sitabrai Lakshmichandra
Jain Sahityoddharaka Siddhanta Granthamala

JIVARAJ JAIN GRANTHAMALA

DHAVALA - 1

THE

SHATKHANDAGAMA

OF

PUSHPADANTA AND BHOOTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALA OF VEERASENACHARYA

Edited

With Introduction, Hindi Translation, Notes and Indexes

KHANDA – 1 **VOL :- 1** **Book – 1**

(SATPRAROOPANA)

By

Late Dr. Hiralal Jain

Assisted by

Late Pt. Phoolachandra Siddhanta Shastri

Late Pt. Balachandra Siddhanta Shastri

Published by

JAIN SAMSKRITI SAMRAKSHAKA SANGHA

Santosh Bhavan, 734, Phaltan Galli,

SOLAPUR – 2. Phone – 320007

Veera Samvat – 2526 A. D. 2000

- Published by –

Seth Aravind Raoji Doshi

President

Jain Samskriti Samrakshaka Sangha

734, Phaltan Galli, **SOLAPUR - 2.**

-

Financial Assistance for Reprint

Late Pt. Padmashree Sumatibai Shah

Shravika Sanstha Nagar, Solapur.

- Revised Fourth Edition –
September 2000 A. D. (1008 Copies)
- Research Assistants –
Late Dr. A. N. Upadhye
Late Pt. Br. Ratanchandji Mukhtar, Saharanpur.
Pt. Jawaharlalji Jain Shastri, Bhindar.

- Printed by –
Step in Process
Kasba Peth, Pune.

Price : Rs. 200/-

(Copyright Reserved)

प्रकाशकीय निवेदन - २०००

धवला षट्खण्डागम सिद्धांत ग्रंथके प्रथम खंडके प्रथम भाग जीवस्थान सत्प्ररुपणाकी चतुर्थ आवृत्तिका संशोधित पुनर्मुद्रण करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

स्व. ब्र. पं. पद्मश्री सुमतिबाईजी शहा, संचालिका, श्राविका संस्था नगर, सोलापूर इन्होंने भ. महावीर रिसर्च सेंटर, श्राविका संस्थानगर सोलापूर की ओरसे धवला ग्रंथके इस प्रथम भाग के पुनर्मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान आदर्श उपस्थित किया उसके लिए हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथराजके मूल सम्पादक स्व. पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्त शास्त्रीजी का वृद्धापकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रंथका पुनर्मुद्रण करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रद्धांजलि समर्पण कर हम समवेदना प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथ मालाके संपादक स्व. पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा सहाय्यक श्री. धन्यकुमार जैनी तथा मुद्रणकार्य स्टेप इन प्रोसेस, पुणे इनके द्वारा संपन्न हुआ है। इनके सहयोग के लिए हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

रतनचंद सखाराम शहा.
मंत्री

विषय-सूची

1 Editorial 1-12
२ प्रकाशकीय १-२
३ संपादकीय ३-१४
४ आवश्यक निवेदन १५-२०
५ प्राक्कथन १-७

प्रस्तावना

षट्खंडागम परिचय (अंगेजीमें) i-iv
१ श्री धवलादि सिद्धांतोके प्रकाशमें आनेका इतिहास १
२ हमारी आदर्श प्रतियां ५
३ पाठसंशोधनके नियम ८
४ षट्खंडागमके रचयिता ११
५ आचार्य परम्परा १८
६ वीर-निर्वाण-काल २८
७ षट्खंडागमकी टीका धवलाके रचयिता ३१
८ धवलासे पूर्वके टीकाकार ४०
९ धवलाकारके सन्मुख उपस्थित साहित्य ४७
१० षट्खंडागमका परिचय ५६
११ सत्प्ररुपणाका विषय ६७
१२ ग्रंथकी भाषा ७०
७८ उपसंहार ७८
टिप्पणियोंमें उल्लिखित ग्रंथोंकी संकेत-सूची ८०
सत्प्ररुपणाकी विषय सूची ८२
मंगलाचरण
सत्प्ररुपणा (मूल, अनुवाद और टिप्पण) १-४१२

परिशिष्ट

१ संत-परुवणा-सुत्ताणि १
२ अवतरण-गाथा-सूची ९
३ ऐतिहासिक नाम-सूची १४
४ भौगोलिक नाम-सूची १५
५ ग्रंथ नामोल्लेख १६
६ वंश नामोल्लेख १६
७ प्रतियोके पाठ-भेद १७
८ विशेष टिप्पण २४
९ शुद्धिपत्र २६